संपादकीय

जीवन की कृत्रिमता को सहज बनाने का पर्व

आधुनिकता के दौर में शहरीकरण ने हमारे जीवन-व्यवहार को गहरे तक प्रभावित किया है। एक तो हम जीवन की भागम-भागम में लगातार मशीनी हो रहे हैं, वहीं सामान्य सामाजिक व्यवहार से दूर होते जा रहे हैं। लोगों में आम धारणा बलवती हुई है कि अगर पैसा है तो सब कुछ संभव है। दरअसल, हमारे सहज-सरल व्यवहार का सीधा रिश्ता हमारे स्वास्थ्य से जुड़ा है। यदि हमारी सोच सकारात्मक है तो हम स्वस्थ रहते हैं। चिकित्सक भी मानते हैं कि सकारात्मकता से हमारे जीवन में स्वास्थ्यवर्धक हार्मोन्स निकलते हैं। होली एक ऐसा ही त्योहार है जो समाज के लिये एक सेफ्टीवॉल का काम करता है। मशीनी जिंदगी की एकरसता को तोड़ने का काम करता है यह पर्व। हम अमीरी-गरीबी, ऊंच-नीच और अधिकारी व कर्मचारी का भेद मिटाकर एक दूसरे को रंग लगाते हैं। हिंदू-मुस्लिम की पहचान भूलकर गले मिल लेते हैं। रंगों का असर हमें व्यक्तिगत पहचान से मुक्त करता है। यह सारा वातावरण हमें सहजता व सरलता का बोध कराता है। दरअसल, आधुनिक जीवन शैली और शहरीकरण ने हमारे तीज-त्योहारों पर गहरा असर डाला है। त्योहार हमारी संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम करते हैं। वह बात अलग है कि त्योहार भी बाजार के हस्तक्षेप से मूल रूप जैसे नहीं रहे। लेकिन यह बात तय है कि देश के विभिन्न राज्यों में सांस्कृतिक विविधता और भौगोलिकता की छाप इस पर्व पर रहती है और जनमानस ने स्थानीय सांस्कृतिक विश्वासों से इसमें नये रंग भरे हैं।

हम होली के दिन पूरे वातावरण में फागुन की महक महसूस करते हैं। प्रकृति भी अपने उभार पर होती है। चारों तरफ फूलों से लदे पौधे व वृक्ष पर्व की सार्थकता को कई गुना बढ़ाकर हमारे मन को सुकून देते हैं। उस पर होली के रंगों का असर तन-मन को आल्हादित कर देता है। हर व्यक्ति में नई ताजगी व ऊर्जा का संचार होता है। शीत ऋतु की विदाई और ग्रीष्म ऋतु की दस्तक हमारे जीवन में नई उमंग भर जाती है। ये वातावरण हमारे जीवन की एकरसता को तोड़ता है। होली के उल्लास का अतिरेक हमें हल्का बना देता है। हम अपने गढ़े कृत्रिम दायरे से बाहर निकल पाते हैं। दरअसल, निजी जीवन में हमने इतनी कृत्रिमताएं ओढ़ ली हैं कि हम सहज व्यवहार नहीं कर पाते। होली हमें कुछ समय के लिये इस बनावटी व्यवहार से मुक्त होकर सहज होने का अवसर देती है। हमें मनुष्य और मनुष्यता का बोध कराती है। हम एक व्यक्ति के रूप में खुद को महसूस कर सकते हैं। लेकिन शहरी जीवन की भागमभाग हमें यह अवसर नहीं देती। निस्संदेह, संपत्ति, पद व रसूख जैसे दंभ हमें व्यक्ति रूप में सरल-सहज नहीं होने देते। यह त्योहार हमें अपने रंग भूलकर सतरंगी होने का अवसर देता है। तमाम चिकित्सीय अनुसंधानों से यह निष्कर्ष सामने आया है कि मन का गुबार निकलने से मनुष्य का रक्तचाप सामान्य होता है और व्यक्ति खुशी महसूस करता है। यह मौसम हमें व्यक्ति व प्रकृति से संवाद का अवसर देकर मनोकायिक रोगों से मुक्त भी करता है।

दीपक द्विवेदी

प्रधान संपादक

ब्लिट्ज इंडिया

जम्मू - कश्मीर देश का मुकुट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गत दिनों हुई श्रीनगर की यात्रा हर मायने में अभूतपूर्व और ऐतिहासिक रही है। यह बात हर वो व्यक्ति स्वीकार करेगा जो निष्पक्ष एवं तटस्थ है, सिवाय उस व्यक्ति के जिसने हर हाल में पीएम मोदी का विरोध करना अपना 'धर्म' बना लिया हो। यह देश के किसी भी प्रधानमंत्री की अब तक की सबसे सफल कश्मीर यात्रा मानी जा रही है। पीएम मोदी की श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में 'विकसित भारत विकसित जम्मू कश्मीर सार्वजनिक रैली में शामिल होने के लिए घाटी के लगभग हर कोने से लोग पहुंचे थे। करीब एक लाख लोगों का एक जगह एकत्रित होना, मोदी-मोदी के नारे लगाना तथा उत्साह प्रदर्शित करना विपक्षियों को शायद पच नहीं रहा है। पीएम मोदी का जिस उमंग एवं उत्साह से स्वागत हुआ, उससे सारा भारत यह विश्वास कर पा रहा है कि कश्मीर अब देश की मुख्यधारा से जुड़ चुका है। सभा में इतने लोगों का समय से पहले आना यह साबित करता है कि कश्मीरी जनता प्रधानमंत्री मोदी में विश्वास रखती है। इन लोगों में कश्मीरी महिलाएं और युवा भी बड़ी संख्या में शामिल थे। लोग याद कर रहे हैं कि पिछले 40 साल में पहली बार ऐसी रैली हुई है और इसे कश्मीर में ऐतिहासिक माना जा रहा है। कश्मीर के राजनीतिक विशेषज्ञों का भी मानना है कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की 1983 की इकबाल पार्क रैली के बाद यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ही रैली है जो शांतिपूर्ण रही है।

आज अगर कश्मीरी जनता पीएम मोदी को सुनने के लिए इतनी बड़ी संख्या में आती है तो निश्चित रूप से उसके पीछे पीएम मोदी द्वारा कश्मीर के हित में गत 10 वर्षों में उठाए गए कदमों का ही विशेष योगदान है; इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। दरअसल पीएम मोदी ने यहां की जनता के मन में नए कश्मीर की उम्मीद जगाई है।

उल्लेखनीय है कि 5 अगस्त 2019 को मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 व 35ए के प्रभाव को खत्म कर दिया था। राज्य को 2 हिस्सों - जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में बांट कर केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया था। इसके पहले 370 व 35ए की आड़ में तत्कालीन कश्मीरी हुक्मरानों ने जम्मू-कश्मीर को अपना गुलाम सा बना लिया था। सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि इसको

हटा कर केंद्र सरकार ने किसी तरह के संवैधानिक व कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन नहीं किया है। 2019 के बाद से मोदी सरकार ने करीब 5 वर्षों के अंतराल में कश्मीर में जी20 की शिखर बैठक के आयोजन के अलावा अनेक ऐसे फैसले लागू किए गए जिन्होंने कश्मीर में विकास की नई बयार ला दी । यह पीएम मोदी की सरकार द्वारा किए गए कामों का ही नतीजा है कि प्रधानमंत्री मोदी का अभूतपूर्व स्वागत कश्मीर की जनता ने किया। खास बात यह रही कि प्रधानमंत्री मोदी ने भी रैली के मौके का पूरा फायदा उठाया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर को देश का मुकुट बताते हुए प्रदेश के विकास का खाका सबके सामने रखा और कहा कि एक विकसित जम्मू-कश्मीर ही विकसित भारत की प्राथमिकता है। जम्मू-कश्मीर आज विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है क्योंकि वह खुलकर सांस रहा है।

पीएम मोदी के लिए जम्मू- कश्मीर कुछ अलग ही मायने रखता है। उनकी सरकार ने जम्मू-कश्मीर के सभी वर्गों और क्षेत्रों के विकास को लेकर बड़े काम किए हैं जिससे वहां के लोगों को मुख्यधारा में शामिल होने का मौका मिला है। पहली बार जम्मू-कश्मीर को दो एम्स मिले हैं। इनके बनने से जनता को विशेष इलाज के लिए अन्य जगहों पर नहीं जाना पड़ेगा। पहली बार, जिला स्तर पर मेडिकल की सुविधाएं मिल रही हैं। यहां फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट और बायो-टेक पार्क के अलावा आईआईटी और आईआईएम जैसे कई प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान भी स्थापित किए गए हैं। जम्मू और श्रीनगर को स्मार्ट सिटी के रूप में तथा तावी रिवर फ्रंट को भी विकसित किया जा रहा है। विकास के क्रम में जम्मू और श्रीनगर के हवाई अड्डों पर रात्रि उड़ान की सुविधा जोड़ी गई है। हज यात्रियों के लिए पहली बार श्रीनगर और जेद्दा के बीच सीधी उड़ान शुरू की गई है। अनेक विकासात्मक और कल्याणकारी परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं या पूरी होने के करीब हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना में गरीब लोगों को नए घर दिए जा रहे हैं। सामुदायिक एवं व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण कराया जा रहा है। गरीब महिलाओं को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिए जा रहे हैं। आज पत्थरबाजी की घटनाएं खत्म हो गई हैं। आतंकी गतिविधियों में भी 45.2 फीसदी की कमी देखने को मिली है।

अगर बात प्रधानमंत्री मोदी की रैली से हटकर करें तो कश्मीर की जनता देख रही है कि पाकिस्तान के कब्जे वाले पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में कितने बुरे हालात हैं। स्वयं केंद्र सरकार भी जम्मू-कश्मीर में सबको विश्वास में लेकर ही आगे बढ़ना चाहती है। इसका प्रमाण है कि प्रधानमंत्री मोदी राज्य के कई बड़े नेताओं से मिल भी चुके हैं। अलगाववादियों और पाकिस्तान को पीएम मोदी बताना चाहते हैं कि नया कश्मीर बनाया जा रहा है और प्रधानमंत्री कहीं भी रैली कर सकते हैं तथा इस बार न कोई हड़ताल, न बम धमाके, न चक्का जाम और न ही इंटरनेट बंद किया गया ।

प्रधानमंत्री ने अपने 27 मिनट के भाषण में वस्तुतः कश्मीरी जनता का दिल जीतने का काम किया। उन्होंने जम्मू- कश्मीर बैंक के बारे में बताया कि कैसे उनकी सरकार की नई नीति की वजह से बैंक व लोगों के हजारों करोड़ रुपये डूबने से बचे। राजनीतिक विशेषज्ञों का मत है कि हाल ही में जैसे गुज्जर बकरवालों और पहाड़ियों को आरक्षण मिला है, उससे भाजपा को लाभ होगा। पीडीपी के पूर्व सांसद और उनकी पत्नी सफीना बेग का प्रधानमंत्री की रैली में होना साफ बताता है कि पहाड़ी लोग भाजपा के साथ हैं। पीएम ने परिवारवाद के प्रति भी लोगों को सावधान किया जिसकी वजह से कश्मीर काफी पिछड़ा रहा। स्पष्ट है कि कश्मीर में भाजपा की मजबूती और जमीनी अमन-चैन पूरे देश में पार्टी को लाभ पहुंचा सकता है। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर शंकराचार्य मंदिर और हजरतबल श्राइन, दोनों को समान महत्व देकर यह बताना चाहा कि उनके लिए हिंदू, मुस्लिम एक समान हैं। प्रधानमंत्री ने इस दौरान 6,400 करोड़ रुपये से अधिक की 43 विकास परियोजनाओं का अनावरण- शिलान्यास भी किया। वह उन आलोचकों का मुह बंद करने में भी कामयाब रहे जो यह आरोप लगाते हैं कि प्रधानमंत्री इसलिए श्रीनगर नहीं जा रहे हैं क्योंकि वहां की स्थितियां अनुकूल नहीं हैं।

कुल मिलाकर प्रधानमंत्री का यह दौरा लंबे समय तक याद किया जाएगा। अब बहुत साफ है कि जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 कोई मसला ही नहीं रहा । ये वो नया जम्मू-कश्मीर है जिसका इंतजार दशकों से था। नए जम्मू-कश्मीर की आंखों में भविष्य की चमक है और इरादों में चुनौतियों को पार करने का हौसला ।

आज अगर कश्मीरी जनता पीएम मोदी को सुनने के लिए इतनी बड़ी संख्या में आती है तो निश्चित रूप से उसके पीछे पीएम मोदी द्वारा कश्मीर के हित में गत 10 वर्षों में उठाए गए कदमों का ही विशेष योगदान है; इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। दरअसल पीएम मोदी ने यहां की जनता के मन में नए कश्मीर की उम्मीद को जगाया है।

शख्सियत | कैप्टन विक्रम बत्रा

कारगिल युद्ध में वीरगति और परमवीर चक्र से सम्मानित

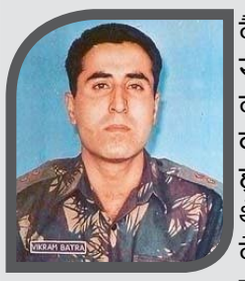

कैप्टन विक्रम बत्रा भारतीय सेना के एक अधिकारी थे जो कारगिल युद्ध में अभूतपूर्व वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। उनके साहस के लिए कैप्टन विक्रम बत्रा को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च और प्रतिष्ठित पदक, परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

विक्रम बत्रा का जन्म हिमाचल प्रदेश के पालमपुर गांव में गिरधारी लाल बत्रा और कमल कांता बत्रा के घर हुआ था। विक्रम के पिता गिरधारी लाल बत्रा एक सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और विक्रम की मां कमल कांता बत्रा भी एक शिक्षिका थीं। विज्ञान में स्नातक करने के बाद विक्रम का चयन सीडीएस के माध्यम से सेना में हो गया। जुलाई 1996 में, वह भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में शामिल हुए। दिसंबर 1997 में प्रशिक्षण पूरा होने पर, उन्हें 6 दिसंबर 1997 को जम्मू के सोपोर नामक स्थान पर सेना की 13 जम्मू और कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने 1999 में कमांडो ट्रेनिंग के साथ-साथ कई ट्रेनिंग भी लीं। 1 जून 1999 को उनकी टुकड़ी को कारगिल युद्ध में भेजा गया। हंप और राकी नाब स्थानों पर विजय प्राप्त करने के बाद विक्रम को कप्तान बनाया गया। इसके बाद श्रीनगर-लेह रोड के ठीक ऊपर की सबसे महत्वपूर्ण 5140 चोटियों को मुक्त कराने की जिम्मेदारी कैप्टन बत्रा की टुकड़ी को दी गई। सबसे आगे दस्ते का नेतृत्व करते हुए उन्होंने दुश्मन पर जमकर हमला किया और उनमें से चार को आमने-सामने की लड़ाई में मार गिराया। बेहद दुर्गम इलाका होने के बावजूद विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह 3.30 बजे इस चोटी पर कब्जा कर लिया। उन्होंने 'मोर' कहा तो सेना ही नहीं बल्कि पूरे भारत में उनका नाम छा गया। इस दौरान विक्रम के कोड नाम के साथ-साथ उन्हें 'कारगिल का शेर' का नाम भी दिया गया। लेकिन घावों के कारण यह अधिकारी वीरगति को प्राप्त हो गया। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना लेफ्टिनेंट अनुज नायर समेत अपने साथियों के साथ मिलकर कई पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया। लेकिन घावों के कारण यह अधिकारी वीरगति को प्राप्त हो गया। उनका जन्म 9 सितंबर 1975 को हिमाचल प्रदेश में हुआ था।

जीवन ऊर्जा | महादेवी वर्मा : जन्म 26 मार्च, 1907 | जन्म

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को होली के दिन फरुखाबाद ,उत्तर प्रदेश में हुआ था। महादेवी वर्मा हिन्दी भाषा की कवयित्री थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया। सन 11 सितम्बर 1987 ई . में इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में महादेवी वर्मा जी का निधन हो गया था।

स्नेह ही मनुष्यता के मंदिर का एकमात्र देवता है

जितने भी दिन जीओ फूल बनकर जियो, कांटा बनकर नहीं। जो अप्राप्त है, उसे पा लेना कठिन नहीं है,परंतु जो प्राप्त था, उसे खोकर फिर पाना अत्यंत कठिन है। प्रतिभा जाति पर निर्भर नहीं करती, जो परिश्रमी है, वही सब कुछ प्राप्त करता है। मैं किसी कर्मकांड में विश्वास नहीं करती। मैं मुक्ति को नहीं, इस धूल को अधिक चाहती हूं। जीवन में कला का सच, सुन्दरता के माध्यम से व्यक्त किये गये सच से अखंड होता है। अपनी शक्ति में विश्वास न करने वाला व्यक्ति अपनी दुर्बलता में विश्वास करता हैं। स्त्री के गुणों का चरम-विकास समाज के शांतिमय वातावरण में ही है। हमारी शिष्टता की परीक्षा तब नहीं हो सकती, जब कोई बड़ा अतिथि हमें अपनी कृपा का दान देने घर में आता है, वरन् उस

समय होती है, जब कोई भूला-भटका भिखारी द्वार पर खड़ा होकर हमारी दया के कण के लिए हाथ फैला देता है। स्नेह ही मनुष्यता के मन्दिर का एकमात्र देवता है। कला मनुष्य के हृदय और बुद्धि को प्रभावित करके ही उसके कर्म को प्रभावित करती है। ऊंचाई अच्छी है, पर उस पर धूप, आंधी, पानी और भी अधिक वेग से आक्रमण करते हैं। नारी अपने सृजन की बाधाएं दूर करने के लिए या अपनी कल्याणी सृष्टि की रक्षा के लिए ही रुद्र बनती है। युगों से पुरुष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।

त्याग हमारी पूर्णता का परिणाम है। स्नेह सब कुछ सह सकता है, केवल दया का भार नहीं सह सकता। कीचड़ से कीचड़ को धो सकना न सम्भव हुआ है न होगा; उसे धोने के लिए निर्मल जल चाहिए। जितने भी दिन जीओ फूल बनकर जियो, काँटा बनकर नहीं। एक निर्दोष के प्राण बचानेवाला असत्य उसकी अहिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ होता है।

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ बिजाना शाजापुर मध्य प्रदेश

इन सभी देवी देवताओं की नित्य प्रति आराधना करनी चाहिए

अपनी कुलदेवी देवता की नित्य सेवा करो। नवग्रहों की आराधना अवश्य करो। ये आपके लिए वरदान रूप होते है। आपके अनुकूल ग्रह के मंत्र का नित्य जप और प्रतिकूल ग्रह के विधिपूर्वक उपाय करने से आप रंक से राजा बन सकते है।

नित्य कम से कम एक बार संध्यावंदन अवश्य करो। ये हमारे धर्म का अंग है यदि इतना भी नियम से कर लेते है और 1 माला भी इसके साथ कर लेते है तो जीवन की कई मुसीबत दूर हो जाती है। एक ही इष्ट को पसंद कर लो। जितना विचार करना है कर लो। जितना सोचना है सोच लो मगर एक इष्ट बनाकर फिर पूर्ण समर्पित होकर उनकी सेवा भजन प्रार्थना और उपासना करो। वही आपके जीवन को बदलेंगे। कर्म के नियम को याद रखे। आपके कर्म आपको ही भोगने है। कोई भी व्यक्ति साधक या देवता आपके कर्म से आपको मुक्त नही कर सकता है। प्रकृति कर्म के नियम को नही बदलती है। किसी देवता की कृपा से

कुछ समय परिवर्तन हो सकता है मगर भोगना तो निश्चित है। नित्य अपने घर में वेदोक्त मंत्र का जप करो। हमारे वेदों में दिए हुए पवित्र मंत्र का कम से कम 15 मिनिट भी आप जप करते है तो जीवन की कई समस्या समाप्त हो जाती है। वेदों में धर्म ग्रंथो का अध्ययन नित्य करो। पुराण और हमारे धर्म ग्रंथ ज्ञान का सागर है। महाभारत,रामायण और श्रीमद भगवद्गीता आदि ग्रंथ दिव्य है। उपनिषद का अभ्यास करने से जीवन बदल जायेगा। ये सब आपके लिए ही कहे गए है। अभी नही करोगे तो कब करोगे जी सत्य,प्रेम,करुणा आदि आध्यात्मिक गुणों को जीवन में विकसित करो। सद्गुणी व्यक्ति बनो। यदि आपके अंदर सद्गुण होंगे तो आपका जीवन अपने आप सुधार जायेगा। जीवन को बदलने के लिए मेहनत करे। मंत्रोंका सहारा अवश्य ले। ईश्वर से प्रार्थना याद रखना इसके साथ में यदि आप सख्त मेहनत करते है तो आपके जीवन को बदलने से कोई नही रोक सकता है।

पंडित कैलाशचंद्र शर्मा

वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व सर्व सिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ के संस्थापक।

मो. नं. 9425980556

प्रेरक प्रसंग

'जो होता है अच्छे के लिए होता है'

एक राजा अपने मंत्री के साथ आखेट पर निकले। वन में हिरन को देख राजा ने तीर प्रत्यंचा पर चढ़ाया ही था कि जंगल में से एक सूअर निकला और राजा को धक्का देकर भागा। इस अप्रत्याशित आघात के कारण तीर की नोक से उनकी उंगली कट गई। रक्त बहने लगा और राजा व्याकुल हो उठे। राजा की उंगली से खून बहता देखकर मंत्री बोले- 'राजन्! भगवान जो करता है, अच्छे के लिए करता है।' राजा काफी पीड़ा में थे। मंत्री की बात सुनकर क्रोध से भर उठे। उन्होंने मंत्री को आज्ञा दी कि वो उसी समय उनका साथ छोड़ अन्य राह पकड़ लें। मंत्री ने आदेश को सहर्ष स्वीकार किया और भिन्न दिशा में निकल पड़े। इधर राजा थोड़ा आगे बढ़े ही थे कि उन्हें जंगल में नरभक्षी कबीले के लोगों ने घेर लिया। वे उन्हें पकड़कर अपने सरदार के पास ले चले। राजा को बलि देने की तैयारी हो ही रही थी कि कबीले के पुजारी ने राजा की कटी उंगली देखकर कहा कि इसका तो अंग भंग है, इसकी बलि स्वीकार नहीं हो सकती।

राजा को जीवनदान मिला तो उन्हें तुरंत मंत्री की याद आई। सोचने लगे कि मंत्री ठीक कहते थे - भगवान जो करता है, अच्छे के लिए ही करता है। मुझे उनका साथ नहीं छोड़ना चाहिए था ।

ऐसा सोचते वे आगे बढ़ रहे थे कि उन्हें मंत्री नदी किनारे भजन करते दिखाई पड़े। राजा ने प्रेमपूर्वक मंत्री को गले लगाया और उन्हें सारा घटनाक्रम कह सुनाया। इसके बाद राजा ने उनसे प्रश्न किया- मेरी उंगली कटी, इसमें भगवान ने मेरा भला किया, पर तुम्हें मैंने अपमानित करके भगाया, इससे भला तुम्हारा क्या भला हुआ ?

मंत्री मुस्कराए और बोले - राजन् ! यदि आपने मुझे भिन्न राह पर न भेजा होता और मैं आपके साथ होता तो अंग भंग के कारण नरभक्षी आपकी बलि न देते, पर मेरी बलि चढ़नी सुनिश्चित थी। इसलिए भगवान जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं।

यह अखबार "माध्यम कार्पोरेट सर्विसेज लि. " के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अरुणलाल द्वारा ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के. के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001 से प्रकाशित एवं सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. 4, एन.के.इंडस्ट्रियल इस्टेट, इनसाइड प्रवासी इंडिस्ट्रयल इस्टेट गेट नं. 2, गोरेगांव पू., मुंबई-63 से मुद्रित। फोन नं. 022-66555719 ईमेल : **indiagroundreport@gmail.com** **कार्यकारी संपादक :** राजा आदाटे (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)।